हिंदी डी सी -1

सेमेस्टर-I

प्रश्न पत्र -II, हिंदी कहानी

इकाई-1

अध्याय: आकाशदीप: जयशंकर प्रसाद

अध्याय लेखक: धर्मेन्द्र प्रताप सिंह

कॉलेज : विभाग / यु.ए.टी., हिंदीविभाग-, दिल्ली विश्वविद्यालय

‘आकाशदीप’ : जयशंकर प्रसाद

विषय प्रवेश

जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व/कृतित्व

‘आकाशदीप’ कहानी की मूल संवेदना

पाठ-विश्लेषण

मूल्यांकन

सहायक पुस्तक सूची

स्व-मूल्यांकन प्रश्नमाला

शब्दार्थ

आकाशदीप : जयशंकर प्रसाद

विषय प्रवेश :

पाठ्यक्रम के प्रस्तुत भाग में हम प्रमुख छायावादी रचनाकार **जयशंकर प्रसाद** की कहानी **'आकाशदीप'** का विशेष अध्ययन करेंगे . 'आकाशदीप' कहानी प्रसाद के तीसरे कहानी संग्रह 'आकाशदीप' (1929) में संकलित एक महत्त्वपूर्ण कहानी है.

प्रस्तुत खंड प्रमुख रूप से दों भागों में विभाजित है. पहले भाग में हम कहानीकार प्रसाद के रचनाकार व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके समस्त रचना संसार का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करेंगे. हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रसाद के महत्त्व को रेखांकित करते हुए हिंदी कहानीधारा के विकास में उनके योगदान का मूल्यांकन करना ही इस खंड का उद्देश्य होगा.

'आकाशदीप' कहानी प्रसाद के साथ-साथ हिंदी कहानीधारा की एक महत्त्वपूर्ण रचना है. अतः दूसरे खंड के अंतर्गत 'आकाशदीप' कहानी की **मूल संवेदना** के साथ **कहानी-कला** एवं **शिल्प** के आधार पर कहानी का विस्तृत विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा. विभिन्न चरणों से गुजरते हुए विद्यार्थी प्रसाद के रचनाकार व्यक्तित्व के साथ उनके कहानीकार रूप और विशेषकर 'आकाशदीप' कहानी के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार कर सकेंगे.

जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व/कृतित्व :

महाकवि **जयशंकर प्रसाद** का जन्म **30 जनवरी 1 889 ई.** को उत्तर प्रदेश के **वाराणसी** जिले के **'सरायगोवर्धन'** नामक स्थान पर हुआ था. यह वही समय है जब खड़ी बोली और आधुनिक हिंदी साहित्य की पूर्वपीठिका तैयार हो रही थी.

प्रसाद के पितामह बाबू शिवरतन साहू बनारस के अत्यंत प्रतिष्ठित नागरिकों में शुमार थे. प्रसाद के पिता का नाम बाबू देवी प्रसाद था. इनके यहां कलाकारों-विद्वानों का बहुत आदर-सत्कार किया जाता था. एक विशेष प्रकार के तंबाकू का व्यापार करने के कारण इन्हें **'सुंघनी साहू परिवार'** के नाम से जाना जाता था. प्रसाद का परिवार शिव का उपासक था. इनके माता-पिता ने इनके जन्म के लिए अपने इष्टदेव से बहुत उपासना की थी. वैद्यनाथ धाम (झारखण्ड) के महाकाल की अराधना के परिणाम स्वरूप पुत्रप्राप्ति होने के कारण बाल्यकाल में इनके माता-पिता इन्हें **'झारखंडी'** कहकर पुकारते थे.

बारह बर्ष की अल्प आयु में ही प्रसाद के सिर से पिता का साया उठ गया. बड़े भाई के व्यापार कुशल न होने के कारण पारिवारिक व्यापार लुढ़कने लगा. पिता की मृत्यु के तीन वर्ष के भीतर ही काल ने प्रसाद से उनकी मां को भी छीन लिया. प्रसाद का जीवन अभी इन अभावों और दुखों से बाहर निकल पाता कि प्रसाद के बड़े भाई शंभूरत्न चल बसे. इनकी मृत्यु ने मानो प्रसाद के पूरे जीवन को ही झकझोर दिया हो. मात्र सत्रह वर्ष की उम्र में ही प्रसाद के जीवन पर आपदाओं का पहाड़ टूट पड़ा जिसका प्रभाव उनकी प्रारंभिक शिक्षा पर भी पड़ा. काशी के **क्वींस कॉलेज** में मात्र **आठवीं** तक की पढ़ाई करने के बाद घर पर ही उनकी शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था की गई जहां पर उन्होंने **संस्कृत, हिंदी, उर्दू** और **फ़ारसी** आदि का अध्ययन किया. **रसमय सिद्ध** जैसे श्रेष्ठ गुरुओं के अलावा **दीनबंधु ब्रह्मचारी** जैसे विद्वानों से प्रसाद ने संस्कृत का ज्ञान अर्जित किया था.

घर का वातावरण 'साहित्य और कला प्रेमी' होने के कारण प्रसाद पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा. नौ वर्ष की उम्र में ही इन्होंने **'कलाधर' उपनाम** से ब्रजभाषा में एक **'सवैया'** लिखकर अपने गुरु रसमय सिद्ध को दिखाया था. **वेद, इतिहास, पुराण तथा साहित्यशास्त्र** आदि का अध्ययन प्रसाद अत्यंत गंभीरता से करते थे. प्रसाद की ही प्रेरणा से उनके भांजे अंबिका प्रसाद गुप्त ने 1909 ई. में अपने संपादकत्व में **'इंदु'** नामक मासिक पत्रिका निकालना आरंभ किया जिसमें प्रसाद नियमित रूप से लिखा करते थे.

प्रसाद क्षय रोग से पीड़ित थे. अर्थाभाव के कारण वह समुचित उपचार भी नहीं करा सके. अतः उनका जीवनकाल अधिक लंबा न रहा. मात्र अड़तालीस वर्ष की उम्र में ही वह **15 नवंबर 1937 ई.** को हमेशा के लिए इस संसार से बिदा हो गए.

- **साहित्यकार जयशंकर प्रसाद**

जयशंकर प्रसाद आधुनिक भारतीय रचनाशीलता तथा हिंदी की **छायावादी काव्यधारा** के शिखर रचनाकार के रूप में ख्यातिलब्ध रहे हैं. वह छायावाद के चार आधार स्तंभों में से एक, सर्वाधिक रोमांटिक तथा बहुविधाकार रचनाकार हैं. वह केवल **कवि** ही नहीं अपितु **नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार** तथा **निबंधकार** भी हैं. लेकिन उनका रचना मानस कविता की तरलता, कल्पना तथा स्मृति की मधुमयता से निर्मित है. उनके उपन्यासों और निबंधों को छोड़कर शेष सभी विधाएं उनकी कविता का ही विस्तार हैं. उन्होंने छायावाद को नेतृत्त्व प्रदान कर सफलता के चरम शिखर पर ले जाने का सार्थक प्रयास किया और इसी कारण वह छायावाद के जनक तथा पोषक माने जाते हैं.

प्रसाद के संपूर्ण रचना संसार का अवलोकन करने पर यह ज्ञात होता है कि उनकी चेतना लगातार समृद्ध होती गई. रचनात्मक विकास के आधार पर उनके संपूर्ण रचना जगत को प्रमुख रूप से **तीन भागों** में विभाजित किया जा सकता है -

प्रसाद की रचना यात्रा का विधिवत आरंभ 'प्रेम-पथिक' (1910) के प्रकाशन से माना जाता है. 'इंदु' में प्रकाशित 'ग्राम' (1911)प्रसाद की पहली कहानी है लेकिन उनका पहला कहानी संग्रह 'छाया' पांच कहानियों के साथ 1912 में प्रकाशित होता है. इसी के आस-पास काव्य रचनाओं में 'कानन-कुसुम' (1912) का प्रकाशन होता है. नाटकों में 'करूणालय' (1912), 'राज्यश्री' (1915) तथा 'विशाख' (1921) इसी दौर के अंतर्गत आते हैं. छः और कहानियों को शामिल कर 'छाया' के संशोधित संस्करण (1918) के प्रकाशन को उनकी रचनायात्रा के **प्रथम सोपान** का आख़िरी छोर माना जा सकता है.

'झरना' (1918) के प्रकाशन के साथ ही प्रसाद के रचनात्मक विकास का **दूसरा दौर** आरंभ होता है. इस दौर में कवि प्रसाद एक नए रंग और तेवर के साथ अपनी अलग पहचान स्थापित करते हैं. 'प्रतिध्वनि' (1926) कहानी संग्रह से प्रसाद जहां हिन्दी कहानी धारा में गुणात्मक परिवर्तन उपस्थित करते हैं तो वहीं इस दौर में उनका नाटककार रूप भी निखरने लगता है. 'अजातशत्रु' (1922) जैसे ऐतिहासिक, चिंतन प्रधान और गंभीर नाटक के साथ प्रसाद 'कामना' (1927) जैसे रूप कथात्मक नाटक रचकर हिन्दी नाट्य साहित्य में विशिष्ट उपलब्धि हासिल करते हैं.

किन्तु रचनात्मक विकास की दृष्टि से प्रसाद साहित्य का **तीसरा आयाम (1927-1937)** सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है. इस दौर में प्रसाद न केवल 'आंसू' (1926), 'लहर' (1935) और 'कामायनी' (1936) जैसी प्रौढ़ एवं कालजयी काव्यकृतियां रचते हैं बल्कि 'कंकाल' (1929), 'तितली' (1934) और 'इरावती' (अपूर्ण) (1938) जैसे महत्त्वपूर्ण उपन्यास भी सृजित करते हैं. उनकी शिखर नाट्य रचनाएं 'स्कंदगुप्त' (1928), 'एक घूंट' (1930), 'चन्द्रगुप्त' (1931), 'ध्रुवस्वामिनी' (1933) भी इसी आख़िरी दौर में रची गयी हैं जिनसे नाटक के एक नए युग का आरंभ होता है. कहानियों के लिहाज से भी यह दौर प्रसाद के रचनात्मक विस्फोट का रहा है. **'आकाशदीप' (1929)**, 'आंधी' (1931) एवं 'इंद्रजाल' (1936) कहानी संग्रह भी इसी दौर में लिखे गए. 'काव्य-कला तथा अन्य निबंध' (1938) नामक प्रसाद के निबंधात्मक लेखों का संकलन भी इसी दशक में पूर्ण हुआ.

- **जयशंकर प्रसाद के प्रकाशित ग्रंथों की सूची**

- **काव्य संग्रह** - प्रेम पथिक(1910), कानन-कुसुम(1912), चित्राधार (1918), झरना (1918), आंसू (1926), लहर (1935), कामायनी (1936)
- **नाटक** - करूणालय (1912), राज्यश्री (1915), उर्वशी चम्पू (1909), सज्जन (1910), प्रायश्चित (1915), विशाख ((1921), अजातशत्रु (1922), जन्मेजय का नागयज्ञ (1926), कामना (1927), स्कंदगुप्त (1928), एक घूंट (1930), चन्द्रगुप्त (1931), ध्रुवस्वामिनी (1933)
- **कहानी संग्रह** - छाया (1912), प्रतिध्वनि (1926), आकाशदीप (1929), आंधी (1931), इंद्रजाल (1933)
- **उपन्यास** - कंकाल (1929), तितली (1934), इरावती (1938)
- **चिंतन** - काव्य-कला तथा अन्य निबंध (1938)
- **हिंदी साहित्य के विकास में जयशंकर प्रसाद का योगदान**

जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं. एक और जहां उन्होंने कविता के क्षेत्र में भाव और भाषा दोनों स्तरों पर पूर्व से चली आ रही परंपरागत रचना परंपरा का विरोध करते हुए अपना नया मार्ग प्रशस्त किया तो वहीं दूसरी ओर अपनी अभिव्यक्ति हेतु उन्होंने आधुनिकता की भाषा 'खड़ी बोली' तथा 'गद्य' विधा को चुना. वस्तुतः प्रसाद गद्य के सामर्थ्य और उसके भविष्य से भली -भांति परिचित थे. फलतः उन्होंने गद्य और खड़ी बोली में रचना करना आरंभ ही नहीं किया बल्कि उसे नए रचनात्मक प्रतिमानों से समृद्ध भी किया.

प्रसाद युग प्रवर्तक रचनाकार थे. उन्होंने साहित्य की लगभग सभी महत्त्वपूर्ण विधाओं में अपनी लेखनी चलाई और हिंदी के गौरव को अक्षुण करने लायक कृतियां भी दीं . लेकिन सर्वाधिक रूप से उनका मन कविता में ही रमा. **कविता** के क्षेत्र में प्रसाद की रचना यात्रा 'झरना' से विधिवत आरंभ होती है . 'कामायनी' उनकी प्रतिभा और जीवन दर्शन का उत्कर्ष है . 'लहर' प्रसाद के प्रगीतों का एक ऐसा संग्रह है जिसमें उनकी काव्यानुभूति के सभी रंगों को देखा जा सकता है . प्रकृति, मधुमयी स्मृतियों, कल्पना तथा जीवन दर्शन के विविध पहलुओं से भरा हुआ यह संग्रह केवल प्रसाद की ही नहीं अपितु छायावाद एवं खड़ी बोली हिंदी की विशिष्ट उपलब्धि है. विषय वस्तु और भाषा की दृष्टि से 'लहर' प्रसाद की रचनात्मक

संभावनाओं तथा खड़ी बोली हिंदी के सामर्थ्य की अद्भुत मिसाल है . अपनी इन्हीं श्रेष्ठ कृतियों के कारण प्रसाद **'हिंदी के महाकवि'** कहलाए.

कविता के बाद प्रसाद का मन जिस विधा में सर्वाधिक रमा वह है - **नाटक**. प्रसाद के प्रायः सभी नाटक ऐतिहासिक कथावस्तु को आधार बनाकर लिखे गये हैं. भारतीय इतिहास के विलुप्त होते हुए स्वर्णिम अतीत को प्रसाद अपने इन नाटकों द्वारा तलाशने और तराशने का कार्य करते हैं. उनके इस इतिहास प्रेम के कारण आलोचकों ने उन्हें 'पुनुरुत्थानवादी' माना है किन्तु प्रसाद का यह मूल्यांकन सर्वथा अनुचित प्रतीत होता है. **"***जन्मेजय का नागयज्ञ' जहां जातीय संघर्ष के भारतीय इतिहास को प्रकाशित करता है वहीं उसमें से प्रसाद एक नवीन जीवन-मूल्य की सृष्टि करते नजर आते हैं...'ध्रुवस्वामनी' का आधार इतिहास भले हो पर उसमें नारी चेतना और इक्कीसवीं सदी में प्रचलित हो चले शब्द 'स्त्री विमर्श' की पुख्ता नींव है, पर अश्लीलता से परे...'राज्य श्री' में इतिहास के अंधकाराच्छन्न पक्ष को आलोकित करने का प्रयास है. हिंदी साहित्य में पहली बार 'ध्रुवस्वामिनी' के रूप में नारी पुरुष-व्यवस्था को चुनौती देती नजर आती है. 'चन्द्रगुप्त' में प्रसाद का नाट्य-शिल्प जहां अपनी पराकाष्ठा पर पहुंचा है, वहीं उसमें जातीय चेतना के स्फुलिंग, राष्ट्रीय एकता के सूत्र भी अत्यंत परिपुष्ट होकर सामने आए हैं. 'स्कंदगुप्त' प्रसाद की एक ऐसी नाट्य-कृति है जिसमें साहित्य से अपेक्षित सभी तत्व एक साथ उपस्थित हैं. राजकुल के अंतर्विरोध, धार्मिक उन्माद, विदेशी कुचक्रों तथा उसमें फंसे भारतवासियों को भविष्य का विकराल रूप दिखाकर कहीं-न-कहीं भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन की एक सशक्त आधार भूमि तैयार करते नजर आते हैं प्रसाद.*"[1]

नाट्य-रचना के संदर्भ में प्रसाद न तो प्राचीन भारतीय पद्धति का सहारा लेते हैं और न ही पाश्चात्य शैली का. वस्तुतः भारतीय मानसिकता से मेल खाती एक नई शैली का प्रयोग उन्होंने अपने नाटकों में किया है जो युगीन चेतना से साम्य रखती है और यही कारण है कि अतीत को आधार बनाकर रचे गये उनके नाटकों में अपने समय की चिंताएं सघन रूप में मौजूद हैं. **"***उनके नाटक जीवन जगत को पहचानने, मनुष्य को अपने अंतस को ढूंढने के माध्यम बने. अंतर्द्वन्द्व और संघर्ष उनके चरित्रों को ऐतिहासिक बना देते हैं...हिंदी नाट्य जगत में उनके प्रयोग आज भी मील का पत्थर सिद्ध हो रहे हैं.*"[2]

'कंकाल', 'तितली' तथा 'इरावती' (अपूर्ण) तीन **उपन्यास** प्रसाद ने हिंदी साहित्य को प्रदान किए. 'कंकाल' जहां यथार्थवादी उपन्यास है, वहीं 'तितली' आदर्शवादी. 'इरावती' की रचना प्रसाद ऐतिहासिक धरातल पर

---

[1]शर्मा, डॉ राजमणि, प्रसाद का गद्य साहित्य - भूमिका, पृष्ठ - 7-8, वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 2009
[2]वही, पृष्ठ - 8

कर रहे थे. **"***कंकाल जीवन की तिक्त अनुभूतियों के प्रति प्रसाद के झंकृत विश्वास का पर्याय है. फलस्वरूप उन्होंने समाज में प्रचलित मान्यताओं, निर्धारित जीवन मूल्यों तथा विधि-निषेधों का घोर विरोध किया है. 'तितली' एक भारतीय नारी की ऐसी कथा है जिसका आधार तो यथार्थ का धरातल है, किंतु उसकी परिणति आदर्श के ठोस शिला पर होती है. भारतीय और पाश्चात्य जीवन शैली के सहारे 'शैला' और 'तितली' की स्वछंद प्रेम-भावना को रूपायित करने का प्रयास है. 'इरावती' के सहारे प्रसाद ने सुदूर अतीत के पुनर्निर्माण का प्रयास किया था.***"***[3]*

अपने संपूर्ण जीवन काल में प्रसाद ने लगभग **सत्तर कहानियां** लिखीं जो विषय की विविधता और कला की उत्कृष्टता के कारक हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं. प्रसाद की कहानियों में दुर्बलता, क्षुद्रता, वेदना, पीड़ा, पथ भ्रष्टता, पतन आदि के साथ जीवन के महत्त्वपूर्ण अंग - सुख-दुःख, हास-विहास, रोमांस, स्नेह, सहानुभूति, करुणा एवं ईर्ष्या आदि मनोभावों का चित्रण है. लेकिन उनकी अधिंकाश कहानियों का आधार 'प्रेम' ही है जिसमें प्रसाद का कवि मन झांकता हुआ दिखाई देता है. वस्तुतः प्रसाद की कहानियां, कवि प्रसाद की कहानियां अधिक, कहानीकार प्रसाद की कहानियां कम प्रतीत होती हैं. प्रसाद अपनी कहानियों के माध्यम से हिंदी कहानीधारा को व्यापक आयाम प्रदान करते हैं. उनकी आरंभिक कहानियां जहां प्रेम और सौन्दर्य की छटा से परिपूर्ण हैं, वहीं बाद की कहानियां ऐतिहासिक आवरण को लेकर भी युगीन समस्याओं के प्रति अधिक सचेत दिखाई पड़ती हैं. 'आकाशदीप', 'ममता', 'पुरस्कार', 'गुंडा' आदि उनकी ऐसी श्रेष्ठ कहानियां हैं जो भाव, भाषा और शिल्प तीनों ही दृष्टियों से हिंदी कहानी को समृद्ध करती हैं. प्रसाद अपने पृथक और मौलिक शिल्प, विशिष्ट चरित्र -चित्रण, उत्कृष्ट भाषा-सौष्ठव तथा अद्भुत वाक्य गठन के कारण खुद को अन्य युगीन कहानीकारों से अलग पंक्ति में खड़ा करते हैं. इसी कारण प्रसाद को **'हिंदी कहानी साहित्य का उन्नायक'** कहा जाता है.

निबंध के क्षेत्र में प्रसाद का मूलतः एक संग्रह - 'काव्यकला तथा अन्य निबंध' प्राप्त होता है. अपने नाटकों के 'प्राक्कथन' के साथ प्रसाद ने 'इंदु', 'हंस' एवं पाक्षिक 'जागरण' पत्रिका में भी कुछ संपादकीय लिखे थे लेकिन इनमें प्रसाद की प्रौढ़ निबंधात्मक प्रतिभा का अभाव है. 'काव्यकला तथा अन्य निबंध' ही प्रसाद की मूल निबंधात्मक कृति है जो निबन्ध-कला की दृष्टि से प्रसाद की उत्कृष्ट निबंध रचना मानी जाती है. इसमें नौ निबंध - 'काव्य और कला', 'रस', 'नाटकों में रस का प्रयोग' (तीनों शास्त्रीय निबंध), 'रहस्यवाद', 'छायावाद', 'यथार्थवाद' (तीनों सैद्धांतिक निबंध), 'नाटकों का आरंभ', 'रंगमंच' और 'आरंभिक पाठ्य काव्य' (तीनों गवेषणात्मक एवं ऐतिहासिक निबंध) संकलित हैं. इन सभी निबंधों में एक ओर जहां

---

[3]**वही, पृष्ठ -9**

प्रसाद की वैचारिक श्रेष्ठता की झलक मिलती है तो वहीं दूसरी ओर ये सभी निबंध **हिंदी आलोचना को ठोस वैचारिक आधार** भी प्रदान करते हैं.

स्पष्ट है कि प्रसाद का साहित्य संसार अत्यंत ही विपुल रहा है. कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास आदि सभी क्षेत्रों में प्रसाद ने नवीन परंपरा और नए जीवन दर्शन की स्थापना की. इसी कारण न केवल आधुनिक हिंदी साहित्य में अपितु संपूर्ण हिंदी साहित्य में उनकी कृतियों का गौरव अक्षुण रहेगा. उन्होंने हिंदी को गौरव करने लायक कालजयी कृतियां प्रदान कीं. ऐसी अद्भुत प्रतिभा के रचनाकार हिंदी में कम ही हैं जिन्होंने साहित्य के सभी क्षेत्रों को अपनी कालजयी रचनाओं के माध्यम से समृद्ध किया हो. हिंदी साहित्य के विकास में उनका सबसे बड़ा योगदान यह है कि उनके जाने के बाद प्रायः हर विधा में उनका लेखन आगे आने वाले कवियों, उपन्यासकारों, कहानीकारों एवं नाटककारों के लिए मील का पत्थर साबित हुआ है.

- **कहानीकार जयशंकर प्रसाद एवं उनका कहानी संसार :**

आधुनिक हिंदी कहानी के प्रणेता **जयशंकर प्रसाद** मूलतः **प्रेमचंद के समकालीन** रचनाकार हैं. प्रेमचंद और प्रसाद ने जिस समय कहानी लिखना आरंभ किया था वह काल हिंदी कहानी के शैशव अवस्था का काल था. कुछ बांग्ला और पाश्चात्य प्रभाव स्वरुप कहानियां हिंदी में लिखी और अनुदित की जा रही थीं. भाव, भाषा और कला की दृष्टि से इस दौर की कहानियों में एक किस्म का कच्चापन था. हिंदी कहानी का अपना कोई स्पष्ट स्वरुप बनता नजर नहीं आ रहा था. प्रसाद वह प्रथम कहानीकार है जिन्होनें अपनी विशिष्ट प्रतिभा द्वारा हिंदी कहानी लेखन के परंपरागत ढर्रे को बदलने की कोशिश की और काफी हद तक सफल भी रहे. प्रसाद की कहानी यात्रा का आरंभ उनकी जिस पहली कहानी- 'ग्राम' से होती है, वह हिंदी कहानी लेखन के बदलते ढर्रे का प्रमुख हस्ताक्षर है. हिंदी कहानी को सजाने-संवारने और समृद्ध करने की दृष्टि से प्रसाद के पांचों कहानी संग्रहों को देखा जा सकता है -

'छाया' (1912) प्रसाद का पहला कहानी संग्रह है. आरंभ में इसमें केवल पांच कहानियां - 'ग्राम', 'तानसेन', 'चंदा', 'रसिया बालम', 'मदन मृणालिनी' संकलित थे. 1918 के संशोधित संस्करण में प्रसाद ने इसमें छः और कहानियां - 'शरणागत', 'सिकंदर की शपथ', 'चित्तौड़ का उद्धार', 'अशोक', 'गुलाम' तथा जहांनाराशामिल कीं. **"***कहानियों के इस प्रारंभिक संग्रह में रोमानी मनोभाव की अधिकांश प्रवृत्तियों का प्रारंभिक रूप हमें मिल जाता है. कला की दृष्टि से ये कहानियां परिपक्व नहीं हैं लेकिन इनमें रोमांटिक कवि के प्रेम-स्वप्न विद्यमान हैं...प्रेम इन कहानियों के पात्रों का धर्म है.* **"**[4] **"***छाया' में संग्रहित कहानियां कला की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान की अधिकारिणी नहीं हैं पर इन दोनों संस्करणों का हिन्दी कहानी साहित्य में ऐतिहासिक महत्त्व है जिन्हें विस्मृत नहीं किया जा सकता. इनमें कहानी कला के बीज अंकुरित होते दिखाई पड़ते हैं जो आगे चलकर पुष्पित-पल्लवित हुए.***"**[5]

'प्रतिध्वनि' (1926) प्रसाद का दूसरा कहानी संग्रह है. इसमें पंद्रह कहानियां संकलित हैं - 'प्रसाद', 'गूदड़ साईं', गुदड़ी में लाल', 'अघोरी का मोह', 'पाप की पराजय', 'सहयोग', 'पत्थर की पुकार', 'उस पार का योगी', 'करूणा की विजय', 'खण्डहर की लिपि', 'चक्रवर्ती का स्तंभ', 'कलावती की शिक्षा', 'दुखिया',

---

[4]डॉ. हरदयाल, हिंदी कहानी : परम्परा और प्रगति - रोमानी-ऐतिहासिक कहानी, पृष्ठ - 60, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2005

[5]शर्मा, डॉ. राजमणि, प्रसाद का गद्य साहित्य - प्रसाद की कहानियां, पृष्ठ - 154, वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 2009

'प्रतिमा' और 'प्रलय'. इस संग्रह की कहानियों से कथा शिल्प में एक नया मोड़ दिखाई पड़ता है. भाव-विशेष को अभिव्यक्त करने वाली इन कहानियों का गठन अधिक व्यवस्थित है. **"***प्रतीकात्मक कहानियों की परंपरा का विकास भी हिंदी में 'प्रतिध्वनि' से ही शुरू हुआ. इन कहानियों में कथावस्तु या तो कहीं-कहीं एक ही स्थिति, घटना या परिदृश्य पर आधृत 'एनेक्डोट' के कथानक जैसी नितांत सूक्ष्म है और यदि कहीं कुछ स्पष्ट भी है तो उतनी ही जितनी पत्तियों में उनकी शिराएं. कहीं किसी विशेष प्रकार की मनः स्थिति वातावरण अथवा रहस्य भावना को ही कहानी का रूप दे दिया है.* **"**[6] **"** *प्रतिध्वनि की प्रायः सभी कहानियां सुकुमार भाव-वृत्तियों को अभिव्यक्त करती हैं, यद्यपि इस संग्रह की कहानियों में आर्थिक-सामजिक प्रश्न भी उठाये गए हैं. स्त्री-पुरुष संबंधों और प्रेम का रोमानी चित्रण करने वाली कहानियां भी इस संग्रह में हैं. इस संग्रह की कुछ कहानियां प्रतीकात्मक और रहस्यात्मक हैं.***"**[7]

'आकाशदीप' (1929) प्रसाद का तीसरा कहानी संग्रह है जिसमें कुल उन्नीस कहानियां संकलित हैं - 'आकाशदीप', 'ममता', 'स्वर्ग के खंडहर में', 'सुनहला साँप', 'हिमालय का पथिक', 'भिखारिन', 'प्रतिध्वनि', 'कला', 'देवदासी', 'समुद्र संतरण', 'वैरागी', 'बंजारा', 'चूड़ीवाली', 'अपराधी', 'प्रणय चिन्ह', 'रूप की छाया', 'ज्योतिष मति', 'रमला' और 'बिसाती'. वस्तुतः यहां से प्रसाद की प्रौढ़ रचनाओं का दौर आरंभ होता है. **"***जो प्रवृत्तियां अपने प्रारंभिक रूप में 'छाया' और प्रतिध्वनि की कहानियों में मिलती हैं वें यहां विकसित और परिपक्व रूप में मिलती हैं. इस संग्रह की सभी कहानियों की केन्द्रीय वस्तु है 'प्रेम'.* **"**[8] **"** *'छाया' की इतिवृत्तात्मकता, 'प्रतिध्वनि' के रेखा-चित्र एवं भाव विधान इन कहानियों में अत्यंत सूक्ष्म और भावात्मक रूप लेकर प्रकाशित हुआ...रूप और वस्तु-विधान में 'आकाशदीप की कहानियां 'छाया' की कहानियों के अधिक निकट होती हुई भी कलात्मक योजना में नितांत नवीन प्रतीत होती हैं. 'आकाशदीप' का निर्माण जिन उपादानों से हुआ है वे 'छाया' और 'प्रतिध्वनि' में भी विद्यमान थे.***"**[9]

---

[6]वही, पृष्ठ - 159-160

[7]डॉ. हरदयाल, हिंदी कहानी : परम्परा और प्रगति - रोमानी-ऐतिहासिक कहानी, पृष्ठ - 61, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2005

[8]वही, पृष्ठ - 61

[9]शर्मा, डॉ. राजमणि, प्रसाद का गद्य साहित्य - प्रसाद की कहानियां, पृष्ठ - 161, वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 2009

'आंधी' (1931) और **'इंद्रजाल' (1936)** प्रसाद का क्रमशः तीसरा और चौथा कहानी संग्रह है जिसमें प्रसाद की प्रौढ़तम कहानियां संग्रहित हैं. प्रसाद की कहानी कला का सर्वोच्च विकास इन दो अंतिम संग्रहों में दिखाई पड़ता है.

1927 से 1931 के बीच लिखी गयी ग्यारह कहानियां **'आंधी'** में संकलित हैं - 'आंधी', 'मधुआ', 'घीसू', 'दासी', 'बेड़ी', 'ब्रतभंग', 'ग्रामगीत', 'विजय', 'अमित स्मृति', 'पुरस्कार' तथा 'नारी'. **"***छाया', 'प्रतिध्वनि' और 'आकाशदीप' का तरुण भावुक कल्पनाशील कवि-हृदय 'आंधी' में विलुप्त सा हो गया है. यहां पहुंचकर प्रसाद कल्पना लोक में विचरण करने वाले केवल भावुक कवि नहीं रह जाते हैं प्रत्युत यथार्थ धरातल पर पहली बार प्रसाद ने मानव के दुःख-दर्द को उसी की भाव-भूमि पर समझा है और उसका विश्वसनीय चित्र खींचा है.***"**[10] **"***जैसे आदर्शवाद से प्रारंभ करके प्रेमचन्द की परिणति यथार्थवाद में हुई, उसी प्रकार रूमानी कल्पना और भावुकता से प्रारंभ करके प्रसाद की परिणति भी यथार्थ के धरातल पर हुई.***"**[11]

1933 से 1936 के बीच लिखी गई चौदह कहानियों का संग्रह **'इंद्रजाल'** प्रसाद का अंतिम कहानी संग्रह है. कुछ ऐतिहासिक और काल्पनिक कहानियों के माध्यम से प्रसाद ने इस संग्रह में अपना स्वर बरकरार रखा है. **"***इंद्रजाल' की कहानियों में प्रसाद का समूचा रचना संसार मुखर है. इसमें 'लहर' की चिंतनशील भावुकता, 'कामायनी' की संस्कृति महाप्राणता एवं 'तितली' की समाज सापेक्षता समन्वित होकर व्यक्त हुई है. 'इंद्रजाल' तक पहुंचते-पहुंचते लेखक की प्रतिभा अपने विकास के चरम उत्कर्ष तक पहुंच चुकी थी. अतीत और वर्त्तमान, शिव और सुन्दर, दुःख और सुख, आदर्श और यथार्थ सबका समन्वित रूप उसे प्राप्त हो चुका था.***"**[12] इस संग्रह में 'इंद्रजाल', 'नूरी', 'चित्र वाले पत्थर', 'सलीम', 'छोटा जादूगर', 'गुंडा', 'देवरथ', 'साल्वती', 'परिवर्तन', 'भीग में', 'विराम चिन्ह', 'संदेह', 'अनबोला' और 'चित्र मंदिर' कहानियां संकलित हैं.

---

[10]वही, पृष्ठ - 168

[11]डॉ. हरदयाल, हिन्दी कहानी : परम्परा और प्रगति - रोमानी-ऐतिहासिक कहानी, पृष्ठ - 62, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2005

[12]शर्मा, डॉ. राजमणि, प्रसाद का गद्य साहित्य - प्रसाद की कहानियां, पृष्ठ - 175-176, वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 2009

'आकाशदीप' : पाठ-विश्लेषण :

'आकाशदीप' प्रसाद की श्रेष्ठ ऐतिहासिक-रोमानी कहानी है. ऐतिहासिकता के आवरण में प्रसाद ने इस कहानी में अपनी रूमानी मनोभावों की अभिव्यक्ति की है. इस कारण कथा का आधार इतिहास या कहानी में चित्रित परिवेश उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना उसमें व्यक्त रूमानी भावबोध है और यह रूमानी भावबोधमूलतः 'बुद्धगुप्त' और 'चंपा' के प्रेमभाव के रूप में व्यक्त ही हुआ है. वस्तुतः इतिहास का सहारा प्रसाद केवल विश्वसनीय वातावरण के निर्माण हेतु साधन के रूप में करते हैं जबकि 'चंपा' और 'बुद्धगुप्त' के बीच पनपे प्रेमभाव की अभिव्यक्ति करना ही उनका साध्य रहा है. इसी कारण प्रेमातुर रचनाकार प्रसाद का मन यहां रूमानी भावबोध और प्रेम के सूक्ष्म चित्रण में अधिक ही रमा है.

'आकाशदीप' मूलतः **चरित्र-प्रधान कहानी** है, जिसमें प्रसाद प्रमुख रूप से पात्रों के मनोभावों का चित्रण कर उनकी हृदयगत जटिलताओं को उद्घाटित करने का प्रयास करते हैं. इससे पात्र विशेष की अच्छाईयां और बुराईयां स्वतः ही खुलकर सामने आ जाती हैं. 'चंपा' 'आकाशदीप' कहानी की प्रमुख पात्र है. प्रसाद उसके मन के भावों-'प्रेम' और 'घृणा' का चित्रण कर उसके व्यक्तित्व की जटिलताओं को बड़े ही सूक्ष्म रूप से उद्घाटित करते हैं.

'आकाशदीप' कहानी में **'चंपा' का अंतर्द्वंद्व ही कहानी का प्रमुख कथ्य** एवं केंद्र बिंदु बन गया है. वह अपने पिता से अगाध प्रेम करती थी और वर्तमान में 'बुद्धगुप' को अपना जीवन साथी मान चुकी थी. लेकिन जैसे ही उसके मन में यह संदेह पैदा होता है कि 'बुद्धगुप्त' ही उसके पिता का हत्यारा है तो वह उससे घृणा करने लगती है. वह उसे मारकर प्रतिशोध लेना चाहती है लेकिन चाहकर भी वह अपने पितृहंता की हत्या नहीं कर पाती है. वह असफल रहती है क्यूंकि वह उससे जितनी घृणा करने लगी थी प्रेम भी उतना ही करती थी. प्रेम और घृणा का यही वह संघर्ष है जो 'चंपा' के चरित्र में अंतर्द्वंद्व पैदा करता है. प्रेम और घृणा का जैसा अंतर्द्वंद्व प्रसाद ने यहां 'चंपा' के चरित्र में चित्रित किया है वैसा हिंदी की अन्य कहानियों में नहीं मिलता है. एक क्षण में पैदा होने वाला 'चंपा' के हृदय का यह संदेह सदा के लिए उसे 'बुद्धगुप्त' से अलग कर देता है. 'बुद्धगुप्त' के प्रति पूर्ण प्रेम का भाव रखते हुए भी वह शारीरिक रूप से उसे प्राप्त नहीं कर पाती है और उसकी स्थिति अत्यंत ही संघर्षशील बन जाती है.

एक ही समय में वह 'बुद्धगुप्त' के प्रति प्रेम का भाव भी रखती है और उसी समय वह उससे घृणा भी करती है. 'चंपा' के व्यक्तित्व का निर्माण उसके मन के भीतर के इसी अंतर्द्वंद्व और संघर्ष से मिलकर होता है. लेकिन 'चंपा' का व्यक्तित्व तब और महान बन जाता है जब वह इसी अंतर्द्वंद्व और संघर्ष के बीच अपने व्यक्तित्व और जीवन में संतुलन की तलाश करने लगती है. उहापोह भरे इस जीवन में वह अपने आगे के जीवन की दिशा खोजने लगती है और अंततः पिता की स्मृति और 'बुद्धगुप्त' के प्रेम में से किसी एक को चुनने के द्वंद्व में उसकी सजग चेतना उसे समाज सेवा की ओर मोड़ देती है.

'चंपा' के व्यक्तिगत जीवन की असफलता उसे सामाजिक सेवा की ओर ले जाती है. समुद्र में भटके हुए यात्रियों को राह दिखाने के लिए वह 'आकाशदीप' जलाने का मार्ग चुनती है. जैसे 'दीप' खुद को जलाकर समुद्र में भटके हुए यात्रियों की मदद करता है, उन्हें राह दिखाता है, वैसे ही 'चंपा' अपने व्यक्तिगत जीवन के सुख-सुविधाओं और भोग-विलास को त्याग कर दुखी और जरूरतमंद लोगों की सेवा में खुद को समर्पित कर देना चाहती है. व्यक्तिगत सुखों को तिलांजलि देकर 'चंपा' एक साथ तीन धरातलों पर महान आदर्श की स्थापना करती है - एक ओर जहां वह वैभव और विलासिता भरी दुनिया का मोह त्याग कर 'बुद्धगुप्त' के साथ स्वदेश वापस जाने से मना कर अपने पिता की स्मृतियों की रक्षा करने हेतु उसके प्रति समर्पित हो जाती है तो वहीं दूसरी ओर अपने भीतर जल रही प्रतिशोध की ज्वाला को शांत कर, कृपाण को अतल जल में डुबों कर वह अपने प्रेमी 'बुद्धगुप्त' के प्रति भी अपनी निष्ठा बनाए रखती है और अपने प्रेम की रक्षा भी करती है. लेकिन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रूप से वह समाज के प्रतिसच्चे अर्थों में अपने कर्तव्यों के निर्वहन का प्रण करती है. इस रूप में 'आकाशदीप' कहानी में **'आकाशदीप' का जलना 'चंपा' के 'व्यक्तिगत जीवन की त्रासदी का प्रतीक'** बन जाता है.

'आकाशदीप' कहानी में 'चंपा' के जीवन में अंतर्द्वंद्व का जो रूप दिखाई देता है वह प्रसाद के लेखनी का मौलिक गुण है और इसी कारण 'आकाशदीप' में चित्रित अंतर्द्वंद्व पाठक के भीतर गहन संवेदना के स्तर पर उतरता है. 'चंपा' के मन के इस अंतर्विरोध द्वारा प्रसाद उसके व्यक्तित्व की अनेक पर्तें उद्घाटित करने में भी पूर्ण सफल रहे हैं.

इस रूप में 'आकाशदीप' **असफल प्रेम की कहानी** बन गई है. प्रसाद को भी 'असफल प्रेम का मानवीकरण' कहा जाता है. वस्तुतः प्रसाद प्रेम की पूर्णता में प्रेम की मृत्यु मानते थे. उनका मानना था कि प्रेम में अधूरापन पूरेपन की कसक से पैदा होता है. भाव-साम्य के रूप में प्रसाद की ये पंक्तियां भी उनके इसी

आदर्श रोमांटिक भावबोध को व्यक्त करती हैं -*"मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया? आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया."*[13]

'आकाशदीप' प्रसाद की सोद्देश्य कहानी है जो अनेक स्तर पर अपने भीतर निहित उद्देश्यों को ध्वनित, व्यंजित एवं संकेतित करती है. 'आकाशदीप' कहानी में प्रसाद के प्रिय सिद्धांत 'कला-कला के लिए' को प्रमुख रूप से देखा जा सकता है लेकिन 'कला जीवन के लिए' जैसे सिद्धांत का भी प्रयोग प्रसाद इसमें बड़े ही मार्मिक रूप से करते हैं. इसी कारण प्रसाद का उद्देश्य इस कहानी में उपदेश बनकर नहीं अपितु व्यंजित, संकेतित और ध्वनित होकर और ज्यादा स्पष्ट रूप से हमारे सामने आता है.

वस्तुतः 'आकाशदीप' कहानी का प्रतिपाद्य धवन्यात्मक शैली में एक रूपक को चरितार्थ करना है. 'आकाशदीप' कहानी की यही विशेषताएं इसे आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य के महत्त्वपूर्ण संवेदनात्मक कहानियों में शुमार करती हैं. इन्हीं आधारों पर प्रसाद हिंदी कथाधारा में सार्थक रूप से नया मोड़ परिलक्षित करते हुए प्रतीत होते हैं.

[13]प्रसाद, जयशंकर - लहर, मधुप गुन गुना कर कह जाता, पृष्ठ - 11, जन भारती प्रकाशन, संस्करण - 2000

क्या आप जानते हैं?

- *जयशंकर प्रसाद **'नागिरी प्रचारिणी सभा',** काशी के उपाध्यक्ष रहे थे.*
- *'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान'द्वारा जयशंकर प्रसाद के नाम से **'जयशंकर प्रसाद अनुशंसा पुरस्कार'** दिया जाता है.*
- *'कामायनी'काव्य कृति के लिए जयशंकर प्रसाद को **'मंगला प्रसाद पारितोषिक पुरस्कार'** प्राप्त हुआ था.*

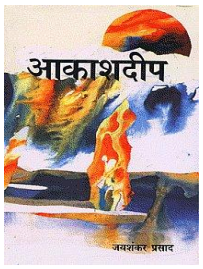

आकाशदीप : पाठ-विश्लेषण :

'आकाशदीप' जयशंकर प्रसाद की श्रेष्ठ ऐतिहासिक -रोमानी कहानी है जो उनके तीसरे कहानी संग्रह **'आकाशदीप' (1929)** में संकलित है. इस संग्रह की अधिकांश कहानियां स्वच्छंदतावादी मनोवृत्ति की कहानियां हैं क्योंकि प्रेम, वीरता, कल्पना आदि **स्वच्छंदतावादी प्रवृतियां** इनमें प्रचूर मात्रा में मिलती हैं.

प्रसाद ने जब कहानी लेखन आरंभ किया तो उस समय हिंदी कहानी लेखन की कोई मान्य परंपरा विद्यमान नहीं थी. कुछ पाश्चात्य और बांग्ला कहानियों के प्रभाव स्वरूप हिंदी में कहानियां लिखी जा रही थीं. प्रसाद इसका अनुकरण या अनुसरण न कर कहानी लेखन की अपनी परंपरा आरंभ करते हुए अपना अलग मार्ग प्रशस्त करते हैं. कहानीकार के रूप में प्रसाद का विकास क्रमशः होता गया. उनकी आरंभिक कहानियां कथानक प्रधान हैं. कथा संगठन, चरित्र -चित्रण तथा अन्यान्य तत्वों की दृष्टि से उनका विशेष महत्त्व नहीं है. लेकिन उनकी प्रौढ़ युग की कहानियां कहानी कला के निकष पर श्रेष्ठ मानी जाती हैं. **कहानी कला के तत्वों** के आधार पर 'आकाशदीप' कहानी का विश्लेषण-मूल्यांकन निम्नांकित है-

- **कथावस्तु**

'कथावस्तु' का सामान्य अर्थ है - कहानी में प्रस्तुत घटनाएं. 'आकाशदीप' कहानी में भी कुछ घटनाएं हैं, जैसे - महाजलपोत से संबद्ध अन्य नाव पर जलदस्यु 'बुद्धगुप्त' और 'चंपा' दोनों बंदी हैं, दोनों अपनी कुशलता, पराक्रम और सहयोग से बंधनमुक्त होकर एक अन्य द्वीप पर पहुंचकर शासन आरंभ करते हैं, पांच वर्ष तक साथ रहने के दौरान दोनों में प्रेम हो जाता है, लेकिन सहसा 'चंपा' को यह भ्रम पैदा होता है कि 'बुद्धगुप्त' ही उसके पिता का हत्यारा है, 'चंपा' के हृदय में अंतर्द्वन्द्व पैदा होता है, वह 'बुद्धगुप्त' के साथ वापस भारत लौटने से मना करती है तो असफल प्रेमी के रूप में निराश होकर 'बुद्धगुप्त' निस्सहाय 'चंपा' को छोड़कर वापस भारत लौट आता है. यही घटनाक्रम है इस कहानी का लेकिन प्रसाद अपनी प्रतिभा से इसे लंबी कहानी का रूप देने में सफल रहे हैं. भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार कथानक विकास के तीनों चरण - बीज (आरंभ), विकास (मध्य) एवं फलागम (अंत) 'आकाशदीप' में देखे जा सकते हैं.

प्रसाद की कहानियां मूलतः तीन तरह से आरंभ होती हैं - वर्णात्मक रूप से, प्रकृति-चित्रण के माध्यम से और पात्रों के कुशल नाटकीय संवादों के द्वारा. 'आकाशदीप' कहानी का आरंभ बंदी 'चंपा' और 'बुद्धगुप्त' के कुशल **नाटकीय संवादों** के माध्यम से होता है -

> *"बंदी"*
> *"क्या है? सोने दो""*
> *"मुक्त होना चाहते हो?"*
> *"अभी नहीं, निद्रा खुलने पर, चुप रहो."*
> *"फिर अवसर न मिलेगा."*
> *"तो क्या तुम भी बंदी हो?"*
> *"हां, धीरे बोलो, इस नाव पर केवल दस नाविक और प्रहरी हैं."*[14]

बंधन से मुक्त 'चंपा''बुद्धगुप्त' को मुक्त कराने की चाह में उससे यह संवाद स्थापित करती है.

आंधी-तुफान के साये में बंदी 'बुद्धगुप्त' का बंधन से मुक्त होकर पहले नाव को अलग करना, 'मणिभद्र' के सिपाहियों से युद्ध में उन्हें पराजित कर नाव को मुक्त करा लेना, 'बुद्धगुप्त' और 'चंपा' का क्रमशः एक दुसरे को यह बताना कि वे यहां कैसे और क्यों पहुंचे तथा एक अज्ञात द्वीप पर शरण लेना आदि घटनाएं कथानक के विकास का **बीज (आरंभ) बिंदु** कही जा सकती हैं. जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है

[14]**प्रसाद, जयशंकर, आकाशदीप (कहानी संग्रह) - आकाशदीप, पृष्ठ - 9-10, भारती भण्डार, आठवां संस्करण, 1963**

पात्रों का परिचय, उनके कैद होने का कारण, उनका मुक्त होने का प्रयास और उनकी सफलता का विवरण मिलता है. इन संक्षिप्त और क्षिप्र घटनाओं के बाद कहानी चौथे भाग में प्रवेश करती है जहां 'चंपा' और 'बुद्धगुप्त' को उस अंजान द्वीप (चंपाद्वीप) पर रहते हुए पांच साल बीत चुके हैं. 'बुद्धगुप्त' का दस्युवृत्ति छोड़कर 'चंपाद्वीप' का शासक बनना, 'चंपा' तथा 'बुद्धगुप्त' का एक दुसरे से प्रेम करना तथा सहसा 'चंपा' को यह एहसास होना कि 'बुद्धगुप्त' ही उसके पिता का हत्यारा है एवं उसके मन में संघर्ष और द्वंद्व का पैदा होना ही कथानक का **विकास (मध्य) बिंदु** है. कहानी के अगले भाग में 'चंपा' अपने मन के अंतर्द्वन्द्व पर विजय प्राप्त करती है. 'चंपा' द्वारा 'बुद्धगुप्त' के वापस भारत देश लौटने के प्रस्ताव को अस्वीकारना, 'बुद्धगुप्त' को अकेले स्वदेश लौटने के लिए कहना, पितृ समाधि के अन्वेषण के उद्देश्य से 'चंपा' का 'चंपाद्वीप' पर ही रह जाना, अपनी स्वर्गीय मां की तरह समुद्र में भटके यात्रियों को राह दिखाने के लिए शाम को 'आकाशदीप' जलाना, समाज सेवा का मार्ग चुनना तथा निराश होकर 'बुद्धगुप्त' का भारतगमन ही इस कहानी के कथानक का **फलागम (अंत) बिंदु** है.

- **चरित्र-सृष्टि**

कहानी में पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए. 'आकाशदीप' कहानी में भी केवल दो -'**बुद्धगुप्त' और 'चंपा'** ही **प्रमुख पात्र** हैं. शेष - नाव का चालक, 'चंपा' की सेविकाएं, 'चंपा' के माता -पिता और 'मणिभद्र' गौण पात्र है. केवल सूचनात्मक प्रयोग होने के कारण इनमें से किसी का कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं है. कहानी के विकास में ये सभी अपनी गौण भूमिका निभाते हैं.

वस्तुतः कहानी में पात्रों का चरित्र-चित्रण घटनाओं द्वारा, उनके अपने कार्यों, संवादों या विचारों द्वारा या अन्य पात्रों के कार्यों, संवादों या विचारों द्वारा उभरकर सामने आता है.

'चंपा' 'आकाशदीप' कहानी की **केन्द्रीय पात्र है.** कहानी की संपूर्ण कथावस्तु या घटनाएं उसी के चारों ओर घूमती हैं. चंपा के मन का अंतर्द्वन्द्व ही उसके चरित्र को महान बनाता है और उसकी शेष सभी चारित्रिक विशेषताएं उसी से जुड़कर उजागर होती हैं. कहानी के आरंभ में ही 'चंपा' के **साहसिक व्यक्तित्व** का पता चलता है जब 'बुद्धगुप्त' बंधन से मुक्त होने हेतु उससे प्रतिप्रश्न करता है - **"*शस्त्र मिलेगा?*"**[15]

[15]**वही, पृष्ठ - 9**

तो वह **पूर्ण विश्वास** एवं **दृढ़ता** के साथ जवाब देती है - **"***मिल जाएगा.***"**[16] इसी बातचीत में 'चंपा' के व्यक्तित्व की एक और विशेषता- **'बुद्धिमत्ता'** का भी परिचय मिलता है-

> **"***तो क्या तुम भी बंदी हो?" (बुद्धगुप्त)*
> *"हां, धीरे बोलो, इस नाव पर दस नाविक और प्रहरी हैं.***"**[17](चंपा)

'चंपा' क्षत्रिय बालिका है. पिता के वीरतापूर्ण बलिदान का प्रभाव उसके भी व्यक्तित्व पर पड़ता है. 'मणिभद्र' के वासना के प्रस्ताव को दृढ़तापूर्वक ठुकराने से भी उसकी **साहसिक** एवं **चारित्रिक दृढ़ता** का ज्ञान होता है.

प्रसाद की कहानियों के पात्रों का चरित्र उनके असाधारण साहस, त्याग, बलिदान, ईर्ष्या आदि के कारण और असाधारण बन गया है. 'आकाशदीप' की 'चंपा' की मनोवृत्ति असाधारण है. उसमें एक समय में एक ही व्यक्ति के प्रति प्रेम और घृणा दोनों परस्पर विरोधी मनोभावों की सृष्टि प्रसाद ने की है जिससे उसका मन द्वंद्व ग्रस्त हो जाता है. **"***एक ही व्यक्ति के प्रति जब एक साथ ही अनुकूल और प्रतिकूल दोनों प्रकार की परस्पर विरोधी भावनावों से ग्रस्त होकर कोई पात्र द्वन्द्व ग्रस्त होता है तो वह एक चरित्र के रूप में आकर्षक हो उठता है.***"**[18]

'आकाशदीप' की 'चंपा' 'बुद्धगुप्त' से प्रेम करती है लेकिन जैसे ही उसके भीतर यह संदेह पैदा होता है कि 'बुद्धगुप्त' उसके पिता का हत्यारा है तो वह उतनी ही तीव्रता से उससे घृणा भी करने लगती है. वह उसकी हत्या की कोशिश भी करती है लेकिन असफल रहती है क्योंकि वह 'बुद्धगुप्त' से जितनी घृणा करने लगी थी प्रेम भी उतना ही करती थी. उसके मन के भीतर के **अंतर्द्वन्द्व और संघर्ष** को सघन रूप से प्रसाद की ये पंक्तियां व्यंजित करती हैं -**"***विश्वास? कदापि नहीं, बुद्धगुप्त! जब मैं अपने हृदय पर विश्वास नहीं कर सकी, उसी ने धोखा दिया, तब मैं कैसे कहूं? मै तुमसे घृणा करती हूं, फिर भी तुम्हारे लिए मर सकती हूं. अंधेर है जलदस्यु. तुम्हे प्यार करती हूं.***"**[19]

---

[16]**वही**

[17]**वही**

[18]**डॉ. हरदयाल, हिंदी कहानी : परम्परा और प्रगति - कहानीकार जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ - 102, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2005**

[19]**प्रसाद, जयशंकर, आकाशदीप (कहानी संग्रह) - आकाशदीप, पृष्ठ - 18, भारती भण्डार, आठवां संस्करण, 1963**

'चंपा' के भीतर का यह संघर्ष उसके व्यक्तित्व को इतना प्रभावित करता है कि उसे वर्तमान की सारी संपन्नता बंदीगृह के कैदी जैसी प्रतीत होने लगती है. बीते हुए अभाव के दिनों को याद करते हुए वह 'बुद्धगुप्त' से आग्रह करती है - **"***मुझे इस बंदीगृह से मुक्त करो. अब तो बाली, जावा और सुमात्रा का वाणिज्य केवल तुम्हारे अधिकार में है महानाविक! परंतु मुझे उन दिनों की स्मृति सुहावनी लगती हैं, जब तुम्हारे पास एक ही नाव थी और चंपा के उपकूल में पण्य लादकर हम लोग सुखी जीवन बिताते थे...बुद्धगुप्त! उस विजन अनंत में जब मांझी सो जाते थे, दीपक बुझ जाते थे, हम-तुम परिश्रम से थककर पालों में शरीर लपेटकर एक-दूसरे का मुहं क्यों देखते थे? वह नक्षत्रों की मधुर छाया..."*[20]

"*इसे हम अभाव का रोमांस कह सकते हैं. यह रूमानी मनोवृत्ति की ही अभिव्यक्ति है. अभाव की ललक और अवसाद का प्रेम प्रसाद की कविताओं, नाटकों, कहानियों, उपन्यासों-सभी में हमें मिलता है."*[21]

"*प्रसाद की कहानियों के रचनात्मक गठन का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि उनके चरित्रों में अन्तर्निहित घात-प्रतिघात कथा के विकास का प्रमुख माध्यम है. इसलिए उनकी प्रत्येक कहानी की संवेदना में चरित्रों का संघर्ष प्रमुख तत्व है. 'आकाशदीप' कहानी इसकी प्रत्यक्ष उदाहरण है."*[22]

'चंपा' अपने मन में पैदा हुए संघर्ष से मुक्त नहीं हो पाती है. 'बुद्धगुप्त' के कहने पर भी - **"***मैं तुम्हारे पिता का घातक नहीं हूं, चंपा! वह एक-दूसरे दस्यु के शस्त्र से मरे.* **"**[23] वह कहती है - **"***यदि मैं इसका विश्वास कर सकती. बुद्धगुप्त, वह दिन कितना सुन्दर होता, वह क्षण कितना स्पृहणीय! आह! तुंम इस निष्ठुरता में भी कितने महान होते!***"**[24]

'बुद्धगुप्त' 'आकाशदीप' कहानी का अकेला प्रमुख पुरुष पात्र है. प्रेम के धरातल पर विकसित हुआ उसका चरित्र अधिक सशक्त है. **"***वह तूफानी समुद्र में भी प्रथमतः स्वयं को मुक्त कर पुनश्च चंपा को बंधन मुक्त करता है. वह चंपाद्वीप का नामकरण करता है और वहां नया राज्य बना लेता है और चंपा को वहां की रानी बना देता है. वह महानाविक बनकर बाली, जावा तथा सुमात्रा आदि द्वीपों में सफल*

---

[20]वही, पृष्ठ - 15

[21]डॉ. हरदयाल,हिंदी कहानी : परम्परा और प्रगति - कहानीकार जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ - 102, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2005

[22]श्रीवास्तव, डॉ. परमानंद, कहानी की रचना प्रक्रिया - प्रेमचंद-युग की हिंदी कहानी, पृष्ठ -58, लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2012

[23]प्रसाद, जयशंकर,आकाशदीप (कहानी संग्रह) - आकाशदीप, पृष्ठ - 21, भारती भण्डार, आठवां संस्करण, 1963

[24]वही, पृष्ठ - 21

वाणिज्य-कौशल के माध्यम से पर्याप्त यशार्जन और प्रचूर धनार्जन करता है. समुद्र की लहरें उसकी आज्ञा मानती हैं...फिर भी वह त्यागी और महान है, संमर्थ होकर भी चंपा को उसकी स्वतंत्र इच्छा पर छोड़ देता है, सक्षम होकर भी चंपा से निराश हो अपने देश भारत लौट आता है. स्नेह, सहानुभूति, उदारता, करुणा, उत्सर्ग, वीरता और विद्रोह आदि समस्त महान पुरुषोचित गुण उसके चरित्र में विद्यमान हैं."[25]

- **कथोपकथन**

"*कथोपकथन कब किस रूप में आवश्यक है, यह लेखक के निर्णय और विचार शक्ति पर निर्भर करता है और उसकी निर्णय -शक्ति जितनी परिपक्व होगी, उसकी विचार शक्ति जितनी दृढ़ होगी तथा उसकी परिस्थितियों की पकड़ जितनी मजबूत होगी, उसका (लेखक का) कथोपकथन उतना ही प्रभावशाली, उतना ही सजीव और उतना ही स्वाभाविक बन पड़ेगा. "*[26] *"कहानी के संवाद नाटक तथा एकांकी के संवादों की भांति, उपन्यास के संवादों की अपेक्षा अधिक त्वरापूर्ण, अधिक पुष्ट, अधिक गतिशील, अधिक गंभीर एवं अधिक प्रभावी होते हैं. घटना विशेष को उद्घाटित करने तथा नाटकीय माध्यम से विषय को रोचक बनाने के लिए भी लेखक कुशल संवादों की योजना बनाता है."*[27]

सिद्धस्थ नाटककार प्रसाद का संवादों पर पूर्ण अधिकार था. 'आकाशदीप' कहानी के संवादों में कथोपकथन के प्रायः सभी गुण - स्वाभाविकता, रोचकता, उपयुक्तता, अनुकूलता, संबद्धता, संक्षिप्तता, मनोवैज्ञानिकता, नाटकीयता, नवीनता, संकेतात्मकता आदि विद्यमान हैं.

संक्षिप्तता कथोपकथन की एक महत्त्वपूर्ण विशिष्टता है. 'आकाशदीप' कहानी का आरंभ छोटे-छोटे ऐसे संवादों से होता है जो कथानक की घटनाओं को गतिशील करने के साथ कहानी की पूरी संवेदना को साकार करने में समर्थ है -*"बंदी"*

"क्या है? सोने दो"
"मुक्त होना चाहते हो?"
"अभी नहीं, निद्रा खुलने पर, चुप रहो."
"फिर अवसर न मिलेगा."
"बड़ा शीत है, कहीं से एक कम्बल डालकर कोई शीत से मुक्त करता."

---

[25]**वही, पृष्ठ - 148-149**

[26]**वही, पृष्ठ - 129-130**
[27]**वही, पृष्ठ - 130**

"आंधी की संभावना है. यही अवसर है. आज मेरे बंधन शिथिल हैं."[28]

नाटकीयता से परिपूर्ण यह संवाद 'चंपा' एवं 'बुद्धगुप्त' की चारित्रिक विशेषताओं को उजागर करते हुए उनके मुक्त होने की छटपटाहट तथा उनकी मानसिक व्यथा को व्यक्त करता है.

स्पष्टता, सहजता, स्वाभाविकता और **रोचकता** के कारण 'आकाशदीप' के संवाद समय, स्थिति और परिवेश के अनुकूल बन पड़े हैं - **"***तुम्हें इन लोगो ने बंदी क्यों बनाया?''*

"वणिक मणिभद्र की पाप-वासना ने."
"तुम्हारा घर कहां है?"
"जाहन्वी के तट पर. चंपानगर की एक क्षत्रिय बालिका हूं.''
"मैं भी ताम्रलिप्ति का एक क्षत्रिय हूं चंपा. परन्तु दुर्भाग्यपूर्ण से जलदस्यु बनकर जीवन बिताता हूं. अब तुम क्या करोगी?"[29]

भावात्मकता, गंभीरता, मनोवैज्ञानिकता, रहस्यात्मकता, कौतूहल और **नाटकीयता,** संवाद की अनेक विशेषताएं इस संवाद में देखीं जा सकती हैं -**"***विश्वास? कदापि नहीं, बुद्धगुप्त! जब मैं अपने हृदय पर विश्वास नहीं कर सकी, उसी ने धोखा दिया, तब मैं कैसे कहूं? मैं तुमसे घृणा करती हूं, फिर भी तुम्हारे लिए मर सकती हूं. अंधेर है जलदस्यु. तुम्हें प्यार करती हूं."*[30] 'चंपा' के इसकथन से उसका चरित्र स्पष्ट रूप से उद्घाटित हो जाता है. उसका मानसिक द्वन्द्व तथा उसका निस्सहाय जीवन 'बुद्धगुप्त' के पवित्र प्रेम और एकनिष्ठता को स्वीकार नहीं कर पाता है.

- **देशकाल-वातावरण**

"*प्रसाद की कहानियों में वातावरण के भावपूर्ण चित्रण पर जोर है जिससे पाठक कथासूत्र को पकड़ कर सहज वेग से आगे नहीं बढ़ता, बल्कि परिदृश्यों की सौन्दर्य छटा में उनका मन उलझता रमता चलता है."*[31]

देशकाल-वातावरण या परिवेश कहानियों का प्राण तत्त्व होता है. इसकी सृष्टि द्वारा कहानीकार पाठक के मन में अपनी कहानी के प्रति अधिक विश्वसनीयता का भाव पैदा करने की कोशिश करता है. जिस

---

[28]प्रसाद, जयशंकर, आकाशदीप (कहानी संग्रह) - आकाशदीप, पृष्ठ - 9, भारती भण्डार, आठवां संस्करण, 1963
[29]वही, पृष्ठ - 12-13
[30]वही, पृष्ठ - 18
[31]चौहान, शिवदान सिंह, हिंदी साहित्य के अस्सी वर्ष, पृष्ठ - 180, राजकमल प्रकाशन, संस्करण - 1954

कहानी में चित्रित परिवेश उसके कथ्य के जितना अनुकूल होगा पाठक उसे उतना ही अपने जीवन के निकट पायेगा.

प्रसाद अपनी प्रायः सभी कहानियों में वातावरण या परिवेश को सजीव रूप से उपस्थित करने में सफल रहे हैं. **सागरीय जीवन** से सम्बद्ध कहानी 'आकाशदीप' में प्रसाद वातावरण को निम्न रूप में साकार करते हैं - **"***विश्राम लेकर बुद्धगुप्त ने पुछा - हम लोग कहां होंगें?"*

"बालद्वीप से बहुत दूर,संभवतः एक नवीन द्वीप के पास, जिसमें अभी हम लोगों का बहुत कम आना-जाना होता है. सिंहल के वणिकों का वहां प्राधान्य है."

"कितने दिनों में हम लोग वहां पहुंचेंगे?"

"अनुकूल पवन मिलने पर दो दिन में. तब तक के लिए खाद्य का अभाव न होगा."[32]

'आकाशदीप' की कथावस्तु का संबंध इतिहास से है लेकिन इसमें इतिहास उस रूप में उपस्थित नहीं है जैसा कि उनके अन्य श्रेष्ठ ऐतिहासिक नाटकों - 'चन्द्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त' या 'ध्रुवस्वामिनी' में उपस्थित है. मूलतः कल्पना और प्रेम भाव पर आधारित इस कहानी में इतिहास केवल कुछ सूचनाओं - 'ताम्रलिप्ति', 'बाली', 'जावा', 'चंपाद्वीप' आदि तक ही सीमित है. इनका उपयोग प्रसाद केवल वातावरण और परिवेश के विश्वसनीय निर्माण तक ही सीमित रखते हैं.

'आकाशदीप' चरित्र प्रधान कहानी है. इसकी प्रमुख पात्र 'चंपा' के मन का अंतर्द्वन्दव ही इसका प्रमुख कथ्य बन गया है. लेकिन प्रसाद इस कहानी के परिवेश को उस युग के अनुकूल बनाने में पूर्ण सफल रहे हैं. इसका प्रमुख कारण इसमें प्रयोग की गयी संस्कृतनिष्ठ तथा तत्सम प्रधान भाषा शैली रही है. वस्तुतः 'आकाशदीप' कहानी का कथ्य जिस युग (गुप्तकाल के आस-पास) को आधार बनाकर रचा गया है उस युग-यथार्थ को शुद्ध संस्कृतनिष्ठ तथा तत्सम प्रधान शब्दावली के माध्यम से ही प्रभावी रूप में साकार किया जा सकता था क्योंकि उस समय की भाषा संस्कृत के आस-पास की ही रही होगी.

पात्रों के कथनों और उनके मनोभावों द्वारा भी प्रसाद परिवेश के निर्माण की कोशिश करते हैं. 'चंपा' के कथन में उसके हृदय का पीड़ा भाव मिलता है. 'बुद्धगुप्त' जिसे वह प्रेम करती है उसी को अपने पिता का हत्यारा भी समझती है और यही अंतर्द्वन्द्व उसकी पीड़ा का कारण है. शाम को सूर्य के जल में डूबने के एक दृश्य के माध्यम से प्रसाद 'चंपा' की मनोदशा को चित्रित करते हैं. प्रकृति-चित्रण में काव्यात्मक

---

[32]प्रसाद, जयशंकर, आकाशदीप (कहानी संग्रह) - आकाशदीप, पृष्ठ - 12, भारती भण्डार, आठवां संस्करण, 1963

तत्वों का सहारा लेकर प्रसाद पात्रों की मनोदशा को अभिव्यक्त कर अद्भुत परिवेश का निर्माण करते हैं. प्रसाद 'आकाशदीप' में देशकाल वातावरण के चित्रण में अप्रतिम रहे हैं.

- **भाषा-शैली**

'आकाशदीप' प्रसाद की स्वछंदतावादी कहानी है. अतः स्वछंदतावादी **भाषा-शैली** का समस्त वैशिष्ट्य - भावात्मकता, नाटकीयता, लाक्षणिकता, व्यंग्यात्मकता, अलंकारिकता, प्रतीकात्मकता, रहस्यात्मकता, प्रवाह, संक्षिप्तता, सारगर्भिता आदि 'आकाशदीप' कहानी में देखें जा सकते हैं.

भाववादी रचनाकार प्रसाद का मन यथार्थ के बाह्य पक्ष के चित्रण में कम उसके संवेदनात्मक पक्ष के चित्रण में अधिक रमा है. 'आकाशदीप' कहानी की भाषा की यह **कोमलता** और **माधुर्य** देखते बनता है - **"***चम्पा मुग्ध-सी समुद्र के उदास वातावरण में अपने को मिश्रित कर देना चाहती थी.***"**[33]

भाषा की दृष्टि से 'आकाशदीप' प्रसाद की महत्त्वपूर्ण कहानियों में से एक है जिसमें प्रसाद भाषा की प्रायः सभी विशिष्टताओं को शामिल करने में सफल रहे हैं. गद्य में भी सहज ही बिंब खड़ा कर देने में माहिर थे प्रसाद. प्रकृति चित्रण में शब्दों के द्वारा वह पुरे दृश्य का सहज ही **बिंब** बना देते हैं - **"***भीषण आंधी, पिशाचनी के समान नाव को अपने हाथों में लेकर कंदुक क्रीड़ा और अट्टाहास करने लगी.* **"**[34] 'आंधी' का मानवीकरण करप्रसाद दूर दृश्य को सहज ही शब्दों में साकार कर देते हैं.

'आकाशदीप' का गद्य अलंकृत गद्य है. जिसमें प्रसाद **उपमामूलक अलंकारों** के साथ **प्रतीकों** एवं अन्य अलंकारों का सार्थक उपयोग किया है - **"***अनंत जलनिधि में उषा का मधुर आलोक फूट पड़ा. सुनहली किरणों और लहरों की कोमल सृष्टि मुस्कुराने लगी.* **"**[35] 'अंनत जलनिधि', 'उषा का मधुर आलोक', 'सुनहली किरणों' और 'कोमल सृष्टि' जैसे कोमल प्रयोग भाषा को अलंकारमय बनाते हैं.

---

[33]**वही, पृष्ठ - 16**
[34]**वही, पृष्ठ - 10**
[35]**वही, पृष्ठ - 11**

प्रसाद की कल्पना **चित्रात्मक** है. भाषा की यही चित्रात्मकता उनके कलात्मकता के साथ मिलकर प्रकृति का अनुपम रूप खड़ा करती है - **"***शरद के धवल नक्षत्र नील गगन में झलमला रहे थे. चन्द्र की उज्जवल विजय पर अंतरिक्ष में शरदलक्ष्मी ने आशीर्वाद के फूलों और खीलों को बिखेरदिया.***"**[36]

"*प्रसाद का कथा प्रसंग के साथ घुला-मिला प्रकृति चित्रण कहीं भी न तो ऊब पैदा करता है और न तो कहानी के प्रवाह में अवरोधक ही बनता है. इसके विपरीत वह कहानी को गति प्रदान करता है. यदि प्रकृति चित्रण के अंशों को कहानी से हटा दिया जाए तो कहानी बड़ी ही नीरस हो जाएगी.***"**[37]
ऐतिहासिक परिवेश पर आधारित 'आकाशदीप' की **भाषा शुद्ध संस्कृतनिष्ठ** तथा **शब्दावली तत्सम प्रधान** है. वस्तुतः कहानी के कथ्य के भीतर जिस काल विशेष का चित्रण है, उसे अपनी संपूर्णता में साकार करने के लिए ऐसी भाषा और शब्दावली अपरिहार्य थी. यद्यपि इसमें कहीं-कहीं क्लिष्टता आ गयी है परन्तु रसास्वादन में अवरोध पैदा नहीं होता है - **"***तारक-खचित नील अम्बर और समुद्र के अवकाश में पवन उधम मचा रहा था. अंधकार से मिलकर पवन दुष्ट हो रहा था. समुद्र में आन्दोलन था.***"**[38]

'आंधी' के इस दृश्य को प्रसाद उसकी पूरी प्रभावमयता के साथ प्रस्तुत करते हैं. ऐसे में उनकी यह भाषा-शैली उस दृश्य विशेष की प्रभावोत्पादकता में पूर्ण वृद्धि करती है. यद्यपि प्रसाद के इस भाषा वैशिष्ट्य की कई बार आलोचना भी होती रही है. ऐसे तत्सम, क्लिष्ट और संस्कृतनिष्ठ प्रयोगों को किताबी और नीरस कहकर नकारा भी गया है लेकिन प्रसाद की यह अपनी निजी पहचान है जो उन्हें औरों से अलग करती है
"*कहानी को कहने या प्रस्तुत करने की पद्धति* ***'शैली'*** *है. कहानी के विभिन्न उपकरण - कथावस्तु, चरित्र, कथोपकथन, वातावरण आदि को प्रस्तुत करने की लेखक की अपनी शैली होती है. भाषा भी एक शैली ही है. प्रसाद की शैली में उनके व्यक्तित्व की गंभीर छाप अंकित है.***"**[39]

'आकाशदीप' प्रसाद कीभावप्रधान कहानी है. घटनाओं के स्थूल वर्णन की जगह भावनाओं के संघर्ष के चित्रण के कारण इस कहानी की शैली स्वतः ही **भावप्रधान** हो गयी है. पात्रों की मनोदशा, प्रकृति-चित्रण तथा घटनाओं के वर्णन में प्रसाद की भावप्रवणता इस रूप में देखी जा सकती है -**"***समुद्र में हिलोरें उठने*

---

[36]वही, पृष्ठ - 13,

[37]शर्मा, डॉ. राजमणि, प्रसाद का गद्य साहित्य - प्रसाद की कहानियां, पृष्ठ - 108, वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 2009

[38]प्रसाद, जयशंकर,आकाशदीप (कहानी संग्रह) - आकाशदीप, पृष्ठ - 10, भारती भण्डार, आठवां संस्करण, 1963

[39]वही, पृष्ठ - 213

लगी. दोनों बंदी आपस में टकराने लगे. पहले बंदी ने अपने को स्वतंत्र कर लिया. दूसरे का बंधन खोलने का प्रयत्न करने लगा. लहरों के धक्के एक-दूसरे को स्पर्श से पुलकित कर रहे थे. मुक्ति की आशा, स्नेह का असंभावित आलिंगन. दोनों ही अंधकार में मुक्त हो गये."[40]

इन शब्दों द्वारा प्रसाद मात्र घटनाओं का वर्णन भर नहीं करते हैं अपितु पात्रों के भीतर के भावों को भी घटनाओं के माध्यम से प्रकट करते हैं. यही उनकी **भाव प्रधान शैली** की विशिष्टता है

स्पष्ट है कि 'आकाशदीप' भाषा की दृष्टि से प्रसाद की अन्यतम कहानी है. इसकी भाषा सुमधुर, सुकोमल, प्रांजल, प्रसाद एवं माधुर्य से संपन्न है तथा इसके उद्धरणों में सरस कविता है, सुन्दर सूक्तियां है एवं सारगर्भित मुहावरे भी हैं. सुन्दर शब्द चयन, सरस वाक्य-विन्यास और इनके सुरुचिपूर्ण प्रयोंगों से इस कहानी की भाषा में जीवन साकार हो गया है.

मूल्यांकन :

आधुनिक हिन्दी कहानी का आरंभ बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक से माना जाता है. हांलाकि इससे पूर्व पहले दशक में भी कहानियां लिखी जा रही थीं लेकिन इनमें मौलिकता का नितांत अभाव था. कुछ बांग्ला और पाश्चात्य प्रभाव में लिखी जा रही इन कहानियों की मौलिकता को लेकर प्रायः प्रश्न उठाए जा ते रहे हैं. इस कारण इन रचनाओं से आधुनिक हिन्दी कहानी के आरंभ का कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिलता है. अतः **प्रसाद और प्रेमचंद** के आगमन से ही **आधुनिक हिन्दी कहानी** का **विधिवत आरंभ** माना जा सकता है.

आधुनिक हिंदी कहानी के प्रणेता **जयशंकर प्रसाद** मूलतः **प्रेमचंद** के **समकालीन** रचनाकार रहे हैं. लेकिन इन दोनों के चिंतन और साहित्य के प्रति दृष्टिकोण में पर्याप्त भिन्नता देखी जा सकती है. आदर्शवादी मूल्यों के साथ अपनी रचनायात्रा आरंभ करने वाले प्रेमचंद जहां सामाजिक कहानीकार के रूप में अपनी पहचान बनाते हैं वहीं रोमांटिक भावबोध की कहानियों से कहानी लेखन की शुरूआत करने वाले प्रसाद मूलतः भाववादी कहानीकार के रूप में अपनी अलग सत्ता स्थापित करते हैं. प्रेमचंद ने खुद को 'आदर्शोन्मुख यथार्थवादी' माना है. उनकी आरंभिक कहानियां ('शतरंज के खिलाड़ी', 'बूढ़ी काकी' आदि) जहां आदर्शवादी मूल्यों की स्थापना में संलग्न दिखाई पड़ती हैं तो रचनात्मक विकास के क्रम में 'कफन'

---

[40]**प्रसाद, जयशंकर, आकाशदीप (कहानी संग्रह) -आकाशदीप, पृष्ठ - 10, भारती भण्डार, आठवां संस्करण, 1963**

और 'पूस की रात' तक पहुंचते-पहुंचते प्रेमचंद का यह आदर्शवादी मन घनघोर यथार्थवाद में पर्यवसित हो जाता है. प्रसाद की आरंभिक कहानियों में जहां रोमानी भाव की प्रधानता है वहीं 'आंधी' और 'इंद्रजाल' संग्रह तक आते-आते प्रसाद को भी जीवन का यथार्थवादी धरालत भाने लगता है. 'गुंडा', 'सलीम', 'विराम-चिन्ह' आदि उनकी श्रेष्ठ यथार्थवादी कहानियां हैं.

स्पष्ट है कि आधुनिक हिंदी कहानी के आरंभिक दौर में कहानी लेखन की दो धाराएं मौजूद थीं. एक धारा के रूप में प्रेमचंद जहां आदर्शोन्मुख यथार्थवादी परंपरा का प्रवर्तन करते हैं तो वहीं दूसरी ओर प्रसाद भावमूलक धारा को नेतृत्त्व प्रदान करते हैं. इन दोनों के मेल से ही आधुनिक हिंदी कहानी का आरंभिक रूप पूर्ण होता हुआ दिखाई देता है - **"***प्रेमचंद और प्रसाद, कहानीकार के रूपों में, एक दूसरे के पूरक हैं. प्रेमचंद में गद्य की छटा है, प्रसाद में काव्य की. प्रेमचंद सारा कुछ कह जाते हैं, प्रसाद काफी कुछ पाठक पर छोड़ जाते हैं. प्रेमचंद वाह के कलाकार हैं, प्रसाद आह के. प्रेमचंद का पाट बहुत बड़ा है, प्रसाद में गहराई अधिक है. दोनों महान कहानीकारों पर हिंदी गर्व कर सकती है.***"*[41]

अपने-अपने वैशिष्ट्य से हिंदी कहानी धारा को समृद्ध करते हुए प्रसाद और प्रेमचंद लगातार जन सामान्य के करीब आते गए. लेकिन सहज ग्राह्य एवं आसानी से समझ में आ सकने के कारण जहां एक ओर साहित्य जगत में प्रेमचंद का अधिक अनुकरण हुआ तो दूसरी ओर पाठकों के बीच भी वह अधिक लोकप्रिय रहे. जबकि विशिष्ट प्रतिभा संपन्न प्रसाद आम व्यक्ति की समझ से दूर होने के कारण न तो साहित्य जगत में उतने अनुकरणीय बन सके और न ही पठकों हृदय में. लगभग तीन सौ कहानियां लिखकर प्रेमचंद ने जहां हिंदी कहानी को मजबूत आधार दिया तो लगभग सत्तर कहानियों की रचना कर प्रसाद ने हिंदी कहानी को एक कदम आगे बढ़ाकर सशक्तता प्रदान की. **"**प्रसाद की सत्तर कहानियों में आयामों की व्यापकता सर्वथा अप्रतिम है. प्रेमचंद श्रेष्ठतर कहानीकार हो सकते हैं, किन्तु उनकी तीन सौ कहानियों में भी आयामों की ऐसी व्यापकता नहीं प्राप्त होती. परिमाण में अधिक न होने पर भी आयामों की ऐसी व्यापकता के गुण में प्रसाद की समता हिंदी का कोई भी कहानीकार नहीं कर सकता.**"**[42]

प्रेमचंद की कहानियों को आदर्श मानकर जिन कहानीकारों ने कहानी लेखन आरंभ किया वे ' **प्रेमचंद स्कूल'** के कहानीकार कहलाए. इनमें **विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'** एवं **सुदर्शन** प्रमुख रहे हैं. इसी प्रकार

---

[41]**मिश्र, डॉ. राम प्रसाद - प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण, पृष्ठ - 212**

[42]**वही, पृष्ठ - 205**

जिन्होंने प्रसाद की कहानियों को आदर्श मानकर कहानियां लिखीं वे **'प्रसाद स्कूल'** के कहानीकार कहलाए. इनमें **चतुरसेन शास्त्री, राय कृष्णदास** और **विनोद शंकर व्यास**का नाम उल्लेखनीय है. चतुरसेन शास्त्री ने जहां प्रसाद की तरह ही विभिन्न युगों के ऐतिहासिक प्रसंगों को आधार बनाकर अनेक मार्मिक कहानियां ('अंबपलिका', 'प्रबुद्ध', 'भिक्षुराज', 'बाणवधु' आदि) लिखीं वहीं राय कृष्णदास ने प्रसाद की तरह ही भावप्रधान कहानियों ('अन्तःपुर का आरंभ', 'रमणों' आदि) की रचना की. विनोदशंकर व्यास ने भी प्रसाद के कहानियों में व्यक्त प्रेम, करुणा आदि मनोभावों को आधार बनाकर कहानी रचना ('कल्पनाओं का राजा', 'विधाता', अपराध' आदि) आरंभ की. वस्तुतः इन सभी कहानीकारों ने मूलतः प्रसाद का अनुकरण और अनुसरण ही किया लेकिन इनमें से कोई भी विषय की व्याप्ति, दार्शनिकता, काव्यात्मकता, भावुकता, कवित्त्वपूर्ण वातावरण, नाटकीय शिल्प योजना या भावों को साकार करने की अद्भुत लेखकीय क्षमता के आधार पर कहानीकार प्रसाद के आगे तो क्या, उनके निकट तक भी नहीं पहुंच सका. प्रसाद ही इस स्कूल के 'हेड मास्टर' थे और आखिर तक बने रहे.

प्रसाद के ही एक और समकालीन कहानीकार **चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'** ने केवल तीन कहानियां लिखकर हिंदी कहानी धारा में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया. 'उसने कहा था' (1915) उनकी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कहानी है जो प्रेम में त्याग और बलिदान जैसे भावों को बड़ी प्रभावमयता से व्यंजित करने के कारण हिंदी की कालजयी कृतियों में शुमार की जाती है. यह कहानी अपने रचनात्मक गठन के साथ पहली बार पूर्वदीप्ति पद्धति के प्रयोग, जीवंत वर्णन एवं प्रेमजन्य भाव के कारण हिंदी कहानी की अभूतपूर्व उपलब्धि बन पड़ी है. प्रसाद की रोमांटिक कहानियां 'उसने कहा था' के बाद ही लिखी गईं. अतः संभव है कि प्रसाद की रोमांटिक कहानियों पर इसका भी प्रभाव पड़ा हो. लेकिन इसके बावजूद भी प्रसाद की कहानियां प्रसाद की अपनी निजी व्यक्तित्व से उपजीं कहानियां हैं. न केवल भाव, भाषा और शिल्प में प्रसाद गुलेरी जी से खुद को अलग खड़ा करते हैं बल्कि प्रभाव की दृष्टि से भी प्रसाद की कहानियां गुलेरी जी की कहानियों से कहीं आगे की कहानियां प्रतीत होती हैं.

वस्तुतः प्रसाद ने जिस समय कहानी लिखना आरंभ किया था वह काल हिंदी कहानी के शैशव अवस्था का काल था. कुछ बांग्ला और पाश्चात्य प्रभाव स्वरुप कहानियां हिंदी में लिखी और अनुदित की जा रही थीं. भाव, भाषा और कहानी कला की दृष्टि से इस दौर की कहानियों में एक किस्म का कच्चापन था. हिंदी कहानी का अपना कोई स्पष्ट स्वरुप बनता नजर नहीं आ रहा था. प्रसाद वह प्रथम कहानीकार है जो अपनी विशिष्ट प्रतिभा द्वारा हिंदी कहानी लेखन के परंपरागत ढर्रे को बदलने की कोशिश करते हैं और काफी हद तक सफल भी रहते हैं . प्रसाद की कहानी यात्रा का आरंभ उनकी जिस पहली कहानी

'ग्राम' से होती है, वह हिंदी कहानी लेखन के बदलते ढर्रे का प्रमुख हस्ताक्षर है. उनके पांचों कहानी संग्रहों को हिंदी कहानी को सजाने-संवारने और समृद्ध करने की दृष्टि से देखा जा सकता है.

प्रसाद अपनी कहानियों के माध्यम से हिंदी कहानी धारा को व्यापक आयाम प्रदान करते हैं. उनकी आरंभिक कहानियां जहां प्रेम और सौन्दर्य की छटा से परिपूर्ण हैं, वहीं बाद की कहानियां ऐतिहासिक आवरण को लेकर भी युगीन समस्याओं के प्रति अधिक सचेत दिखाई पड़ती हैं. 'आकाशदीप', 'ममता', 'पुरस्कार', 'गुंडा' आदि उनकी ऐसी श्रेष्ठ कहानियां हैं जो भाव, भाषा और शिल्प तीनों ही दृष्टियों से हिंदी कहानी को समृद्ध करती हैं. प्रसाद अपने पृथक और मौलिक शिल्प, विशिष्ट चरित्र-चित्रण, उत्कृष्ट भाषा-सौष्ठव तथा अद्भुत वाक्य गठन के कारण खुद को अन्य युगीन कहानीकारों से अलग पंक्ति में खड़ा करते हैं. इसी कारण प्रसाद को 'हिंदी कहानी धारा का उन्नायक' कहा जा सकता है.

'आकाशदीप' कहानी न केवल प्रसाद की रचना यात्रा की अपितु आधुनिक हिंदी कहानी के विकास की भी एक महत्त्वपूर्ण रचना है. आधुनिक हिन्दी कहानी के आरंभिक दौर में ही प्रसाद ने 'आकाशदीप' जैसी प्रौढ़ कहानी लिखकर हिंदी कहानी को एक प्रतिमान प्रदान किया. भाव, भाषा और शिल्प तीनों ही आधारों पर 'आकाशदीप' अपने समय के साथ बाद के दौर के कहानीकारों के लिए भी चुनौतीपूर्ण रचना बनी रही. परिवेश को अपेक्षाकृत कम तथा पात्रों के मनोगत भावों को अधिक महत्त्व देकर प्रसाद ने इस कहानी को मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान किया है. हिंदी कहानी के इतिहास में यह पहली घटना थी जब पात्रों के मनोविज्ञान का भी अध्ययन आरंभ हुआ और आगे चलकर जैनेन्द्र के नेतृत्त्व में हिंदी में मनोवैज्ञानिक कहानियों की एक अलग धारा ही आरंभ हो गई. 'आकाशदीप' कहानी और प्रसाद की यह बड़ी उपलब्धि रही है. आधुनिक हिंदी कहानी धारा के विकास में 'आकाशदीप' के महत्त्व को इस वाक्य से समझा जा सकता है. उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि **जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिंदी कहानी धारा में युगांतर उपस्थित** करने वाले कहानीकार रहे हैं और इस प्रक्रिया में उनकी महत्त्वपूर्ण संवेदनात्मक कहानी 'आकाशदीप' की निर्णायक भूमिका रही है.

स्व-मूल्यांकन प्रश्नमाला :

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(1) प्रसाद की **कहानी यात्रा** के संदर्भ में निम्न में से कौन सा कथन उपयुक्त है?

(**क**) आदर्शवाद से यथार्थवाद तक

(**ख**) यथार्थवाद से आदर्शवाद तक

(**ग**) रोमानियत से यथार्थवाद तक

(**घ**) यथार्थवाद से रोमानियत तक

(2) 'आकाशदीप'कहानी संग्रह का **प्रकाशन वर्ष** क्या है?

(क) 1928 ई.

(ख) 1929 ई.

(ग) 1938 ई.

(घ) 1927 ई.

(3) जयशंकर प्रसाद के कहानी संग्रहों की **संख्या** कितनी है?

(क) पांच

(ख) चार

(ग) छः

(घ) सात

(4) जयशंकर प्रसाद के कहानियों की **भाषा** के संबंध में सबसे सटीक कथन क्या है?

(क) सरल एवं सहज

(ख) सरल एवं तत्सम प्रधान

(ग) संस्कृतनिष्ठ तत्सम प्रधान

(घ) ग्रामीण बोलचाल की भाषा

(5) 'आकाशदीप' कहानी की नायिका 'चंपा' के **मन का भाव** कैसा है?

(क) हर्ष एवं उल्लास

(ख) द्वंद्व एवं संघर्ष

(ग) शोकाकुल

(घ) शांत

(6) निम्नलिखित में से **सही कथन** का चुनाव करें.

(क) मणिभद्र मुख्य एवं बुद्धगुप्त गौण पात्र हैं.

(ख) बुद्धगुप्त मुख्य और चंपा गौण पात्र हैं.

(ग) चंपा गौण एवं बुद्धगुप्त मुख्य पात्र हैं.

(घ) मणिभद्र गौण एवं बुद्धगुप्त मुख्य पात्र हैं.

(7) 'आकाशदीप' कहानी का **मुख्य कथ्य** क्या है?

(क) चंपा का बुद्धगुप्त के प्रति प्रेम

(ख) चंपा का बुद्धगुप्त के प्रति घृणा

(ग) चंपा के मन का द्वंद्व एवं संघर्ष

(घ) बुद्धगुप्त का चंपा के प्रति प्रेम और घृणा

(8) 'आकाशदीप' कहानी में 'आकाशदीप' किस का **प्रतीक** है?

(क) चंपा के जीवन की त्रासदी का

(ख) बुद्धगुप्त की जीत का

(ग) चंपा और बुद्धगुप्त के प्रेम का

(घ) चंपा और बुद्धगुप्त की घृणा का

(9) 'आकाशदीप' कहानी की **शैली** क्या है?

(क) ऐतिहासिक शैली

(ख) यथार्थवादी शैली

(ग) कल्पना-प्रधान शैली

(घ) भाव-प्रधान शैली

(10) 'आकाशदीप' कहानी में **परिवेश का महत्त्व कम** है, क्यों?

(क) ऐतिहासिक कहानी है.

(ख) काल्पनिक कहानी है.

(ग) कहानी में पात्रों के मनोभावों का अधिक महत्त्व है.

(घ) कहानी में अपने समय के प्रश्न मौजूद नहीं हैं.

सही उत्तर - (1) ग, (2) ख, (3) क, (4) ग, (5) ख, (6) घ, (7) ग, (8) क, (9) घ, (10) ग.

लघु-उत्तरीय प्रश्न :

(1) 'आकाशदीप' कहानी की पृष्ठभूमि बताइए.

(2) 'आकाशदीप' कहानी में चित्रित परिवेश पर प्रकाश डालिए.

(3) 'आकाशदीप' कहानी की नायिका 'चंपा' के अंतर्द्वंद्व पर अपना मत रखिए.

(4) 'आकाशदीप' कहानी की भाषा-शैली पर विचार कीजिए.

(5) 'आकाशदीप' कहानी के कथावस्तु को बताईए.

दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न :

(1) कहानीकार के रूप में जयशंकर प्रसाद का मूल्यांकन करते हुए 'आकाशदीप' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए.

(2) 'आकाशदीप' कहानी की मूल-संवेदना पर विचार कीजिए.

(3) कहानी-कला के आधार पर 'आकाशदीप' कहानी कामूल्यांकन करें.

(4) 'प्रसाद की कहानियों में उनके पात्रों का चरित्र निर्माण उनके मन के अंतर्द्वंद्व से हुआ' इस कथन के आलोक में 'आकाशदीप' कहानी की नायिका 'चंपा' का चरित्र-चित्रण कीजिए.

(5) 'आकाशदीप' कहानी में प्रसाद का भाववादी मन अपने उत्कर्ष रूप में व्यक्त हुआ है', इस सन्दर्भ में अपने विचार रखिए.

शब्दार्थ :

रज्जू : रस्सी, तारक खचित नील अम्बर : तारों से भरा नीला आकाश, आपत्ति : विपदा या मुसीबत, तूर्य : नगाड़ा या तुरही, कंदुक-क्रीड़ा : गेंद का खेल, लाघव : चतुराई, कटि : कमर, वरुणदेव : समुद्र का देवता, क्षत : घाव, सिंहल : लंका, शैलखंड : चट्टान, जाह्नवी : जहुन ऋषि की पुत्री अर्थात् गंगा, नभ : आकाश, जलनिधि : समुद्र, अदृष्ट : भाग्य, अनिर्दिष्ट : अनिश्चित, धवल : सफेद, सदृश : समान, संभ्रम्पूर्ण : आदरयुक्त, असयंत कुंतल : बिखरे बाल, दुर्दांत : जिसे दबाना या वश में करना कठिन हो, बेला : समुद्र का तट, मंजूषा : संदूकची, रजत : चांदी जैसा, धीवर : मल्लाह या मछुआरे, कंडील : एक प्रकार का आधान जिसमें दीपक जलाया जाता है, क्षीरनिधिशायी अंनत : भगवान् विष्णु जो (पौराणिक मान्यता के अनुसार) क्षीरसागर में शयनरत हैं, उपकूल : किनारे के पास की भूमि, पण्य : वस्तुएं, तरी : नाव, उन्मादी : पागल, पश्चिम का पथिक : डूबता सूरज, स्वर्ण-गोलक : सूरज, बजरा : छोटी नाव, शैलखंड : चट्टान,

प्राचीर : दीवार, नील पिंगल : ललाई लिए हुए भूरापन, कुहक : बोलना, परिरंभ : आलिंगन, प्रतिशोध : बदला, शिविकारूढ़ : पालकी पर चढ़कर, शिविका : पालकी, कुसुम -भूषण : फूलों के गहने, स्पृहणीय : जिसके लिए कामना की जाए, शची : इंद्र की पत्नी, चंद्रकांतमणि : वह मणि जो इंद्रा के प्रकाश से द्रवित हो उठती हो, तारिका : उल्का, शुन्य : आकाश, निविड़तम : गहरा अंधकार, अंक : गोद, पुंज : समूह के, विभव : ऐश्वर्य, व्याल : साँप, संतरण : तिरना.

सहायक ग्रन्थ-सूची :

(1) मदान, डॉ. इन्द्रनाथ - हिंदी कहानी : पहचान और परख, लिपि प्रकाशन, दिल्ली.

(2) वाजपेयी, नंद दुलारे - जयशंकर प्रसाद, भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश.

(3) शर्मा, डॉ. राजमणि - प्रसाद का गद्य साहित्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली.

(4) हरदयाल, डॉ. -हिंदी कहानी : परम्परा और प्रगति, वाणी प्रकाशन, दिल्ली.

(5) श्रोत्रिय, डॉ. प्रभाकर - प्रसाद का साहित्य, आत्माराम एण्ड संस प्रकाशन, दिल्ली.

(6) बाहरी, डॉ. हरदेव - प्रसाद साहित्य-कोश, भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश.

(7) शाह, रमेशचंद्र - जयशंकर प्रसाद (भारतीय साहित्य के निर्माता श्रेणी के अंतर्गत), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, आदि.

अन्य महत्वपूर्ण जानकारियाँ :

इंटरनेट पर **'आकाशदीप'** कहानी पढ़ने के लिए निम्नलिखित में से किसी भी एक लिंक पर कंट्रोल (Ctrl) के साथ क्लिक करें -

- http://www.hindisamay.com/kahani/akashdeep.htm
- http://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%86%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B6%E0%A4%A6%E0%A5%80%E0%A4%AA_-%E0%A4%9C%E0%A4%AF%E0%A4%B6%E0%A4%82%E0%A4%95%E0%A4%B0_%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%A6
- http://gadyakosh.org/gk/%E0%A4%86%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B6%E0%A4%A6%E0%A5%80%E0%A4%AA_/_%E0%A4%9C%E0%A4%

AF%E0%A4%B6%E0%A4%82%E0%A4%95%E0%A4%B0_%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%A6#.UafP89hZ72s